जाल

- अन्ना भाऊ साठे
- अनु. हसन यु. पठान

'अरे बेटे, महारों ने पायरी (सीढ़ी) छोड़ दी, अब उन्हें गाँव की ताकत दिखाते हैं। नहीं तो महार जाति सिर पर चढ़ जाएगी।' ऐसा कहते हुए दादा देशमुख एक-एक घर घूमने लगा।

उसने महारों के खिलाफ आग भड़काई और अचानक माहौल बिगड़ गया। पूरा गाँव पागल हो गया। हर कोई महारों को दबाने की बात करने लगा। 'महारवाड़े में गधे से हल चलवाऊंगा, तभी मेरा नाम दादा देशमुख!' ऐसा दादा ने ऐलान किया। गाँव के छोटे-बड़े सभी लोग चावड़ी (ग्राम सभा) में इकट्ठा हुए। बज्या रामोशी महारों को लेकर आने के लिए गया और जैसे ही महार चावड़ी पर आएंगे, उन्हें पीटने का विचार कर गाँव वाले बैठे थे।

कारण दादा देशमुख के घर में जैसे मातम छाया हुआ था। पिछले दो दिनों से देशमुख का एक बड़ा बैल मर कर खूँटे से गिरा पड़ा था। वह लोहे जैसा सक्त हो गया था और कद्दू की तरह फूला हुआ था, आँखें फटी हुई थीं। उस बैल पर मक्खियों का झुंड भीन-भीना रहा था। वह मरा हुआ बैल देखकर देशमुख का पूरा परिवार दहशत में था, भयभीत हुआ था। दादा बिलकुल असहाय हो गया था। अपने बैल की मौत से ज्यादा इस बात का दुःख हो रहा था कि बैल का मृत शरीर दो दिनों से आँगन में पड़ा हुआ था, जिसे हटाया नहीं गया था। और इस दुःख का कारण दादा के लिए गरीब महार और उनके परिवार ही थे, इसलिए वह क्रोधित था।

कारण महारों ने अचानक मरे हुए जानवरों को ढ़ोना बंद कर दिया था। इसीलिए देशमुख महारों के नाम पर गुस्सा निकाल रहा था। अतः उसने दत्ता पाटील को उकसा। महारों से बातचीत से काम नहीं चलेगा, सीधा जुतों से बात करनी होगी, ऐसा वह सबको कहते घुम रहा था। दत्ता पाटील जो गाँव का पुलिस पाटील था, न्याय करने के बजाय महारों को दंडित करने के लिए तैयार बैठा था। वह आँखें बंद किए बैठा था, सोच रहा था कि महार आने पर उनसे कैसे बात करनी है। वह शब्दों को जोड़ रहा था। गुणपाल शेट्ये गाल फुलाकर महारों के आने का इंतजार कर रहा था। वह बार-बार सभी बुजुर्ग मांगों को महारों के अन्याय और उसके संभावित परिणामों के बारे में बता रहा था। यदि महार झुके नहीं, तो पूरे गाँव का महारवाड़ा हो जाएगा।

और सभी की आँखों के सामने देशमुख का मरा हुआ बैल घूम रहा था। इस वजह से पूरा गाँव डरा हुआ था। उस बैल ने सभी का दिमाग चक्करा दिया था। और वास्तव में वहाँ जमा हर आदमी मन ही मन सोच रहा था, अगर उनके जानवर इस तरह मर गए तो क्या होगा? नुक़सान की बात तो वे अपने-आप ही भूल गए थे। असली डर यह था कि अगर महारों ने मरे हुए जानवर को नहीं हटाया, तो उन्हें खुद ही हटाना पड़ेगा। और इसी डर के कारण सबका गुस्सा उफान पर था। सबके दिमाग गर्म हो चुके थे। जानवर मर चुका था, लेकिन उसके शव के पास बैठकर खाना कैसे खाया जाए, इस एक विचार से सबके चेहरे काले पडे हुए थे और उन्हें गुस्सैल बना दिया था।

गुंडा चाळका बीच में उठकर बोला,

'भाइयों, बुढ़िया मरने का दुःख नहीं है। लेकिन वक्त बिगड़ रहा है, इस पर आज सोचने की ज़रूरत है। महारों को पीटकर...'

इतने में पाटील ने आँखें खोलकर कहा, 'मतलब, जानवरों को मरने दो, लेकिन महारों को सिर पर मत चढ़ने दो। है ना?'"

'हाँ, हाँ, बिल्कुल ऐसा ही।' चाळका ने सिर हिलाते हुए कहा, 'इस पूरे गाँव में दत्ता पाटील जैसा समझदार आदमी कभी नहीं हुआ। उसने मेरी बात झट से पकड़ ली। अब महारों को ताकत दिखानी बाकी है, बस यही करना है।' 'ताकत' शब्द पर उसने जोर दिया।

'दिखानी ही पड़ेगी,' देशमुख ने नाक फुलाते हुए और आवाज तेज करते हुए कहा, 'जाति ने पायरी (सीढ़ी) छोड़ दी। कुत्ते, बिल्लियाँ, जानवर और मांग, महार इंसान नहीं होते, यह मेरे पिता की कहावत है। लेकिन इन हरामियों ने मेरे आँगन में बैल को सड़ने दिया। बच्चों का तो हाल बेहाल है, बैल फटने की हालत में आ गया है। और इस बूढ़े को कुछ दिखाई ही नहीं दे रहा...'

'बात तो सही है,' दत्ता पाटील ने कहा, 'मैं तो सारे महारों को गोली से उड़ा देता, पर क्या करूँ, मेरा बैल मर गया है।'

इतने में महारों को बुलाने गए वज्या रामोशी अकेला ही लौट आया। उसे खाली हाथ आते देख देशमुख का गुस्सा भड़क गया। वह रामोशी पर चिल्लाते हुए बोला,

'अरे बेवकूफ, क्या बोले महार?'

'आ रहे हैं कि नहीं?' रामोशी ने जवाब दिया, और सुतार ने धीमी आवाज में पूछा,

'अरे नाईक! वो महार डर गए होंगे, है ना?'

'वो क्यों डरेंगे?' रामोशी बोला, 'क्या उन्होंने कोई डाका डाला है? या किसी का घर लूटा है?'

'ये भी सही कह रहा है!' शंक्या सुतार बुदबुदाया। उसका ये कराहता स्वर सुनकर बगल में बैठे पांडू नाई ने तीखे स्वर में कहा,

'क्या सही है शंक्या! तो फिर ये मरे हुए जानवर हमें क्यों खींचने पड़ेंगे?'

नाई की चढ़ती आवाज़ से पाटील ने सिर उठाया। वह सबको हिम्मत देते हुए बोला,

'भाइयों, चुप रहो। ज्यादा मत बोलो।'

इतने में सारे महार इकट्ठे होकर आ गए। उन्हें देखकर गाँव वाले आपस में फुसफुसाने लगे। खाँसकर सब सीधे हो गए। कुछ लोग लड़ाई की तैयारी करने लगे। सभी की नजरें महारों पर टिक गईं। उन्होंने हरीबा महार को देखा, और सबकी पलकें झपक गईं। सारे महार सामने ही बैठ गए, और गाँव वाले एक-दूसरे का मुँह देखने लगे। पाटील, शेटे, चाळका, देशमुख सबने अपने सिर ऊँचे कर लिए। चारों ओर फुसफुसाहट बढ़ गई। उसे हाथ से शांत करते हुए पाटील महारों से बोला,

'हाँ, बोलो महारों, ये मुसीबत क्यों खड़ी की है? अब हम गाँव वाले जानवर पालें या नहीं, बताओ?'

यह सुनकर हरीबा महार शांत स्वर में बोला,

'पालने चाहिए। जिसमें जानवर पालने की ताकत है, वह ज़रूर पालें। हमने कब मना किया?'

'तुमने मना नहीं किया,' पाटील बोला, 'अब ठीक से बोलो। जानवर पालने की बात करते हो, लेकिन मरे हुए जानवर नहीं उठाते, इसे क्या कहते हैं?'

'इसका नाम बताऊं?' हरीबा बोला, 'जानवर तुम्हारे हैं, दूध तुम ही पीते हो। बैल तुम्हारा है, उसकी जिंदगी भर तुम ही देखभाल करते हो। वो बैल तुम्हारे खेतों की जुताई करता है; और जब वो जानवर मर जाते हैं तो हमें मुफ्त में काम करना पड़ता है?'

'मतलब, तुम्हारे जानवर मरें और हम उन्हें उठाएँ?' बीच में बाळू महार ने कहा, और पाटील कुछ कहने ही वाला था कि देशमुख अचानक उठकर बोला,

'अरे ओ, समझदार बाप के छोरे, आज तक मरे हुआ जानवर क्यों उठाएँ, बोल?'

'उठाएँ तो है। हमने कब मना किया?' हरीबा बोला, 'लेकिन तब समझ नहीं थी। अब समझ आ गई है।'

'क्या समझ आई है, बेवकूफ?' शेटे ने गर्दन घुमाते हुए गुस्से में कहा, 'अरे, भगवान ने ही तुम्हें मरे हुए जानवर उठाने के लिए महार बनाया है।'

'ऐसा क्यों?' हरीबा ने गमछा कंधे पर डालते हुए शेटे पर तमतमाते हुए कहा, 'किस भगवान ने हमें महार बनाया है? तो फिर जाओ और उस भगवान से कहो, "आओ और इन मरे हुए जानवरों को उठाओ।" जाओ।'

'अभी सुनो? सुनो, गाँववालों!' देशमुख चिल्लाते हुए बोला, 'सुनो, ये महार कैसे उल्टा जवाब दे रहा है। हरीबा, उल्टा मत बोल।'

'मैं तो सीधा ही बोल रहा हूँ,' हरीबा ने कहा, और पाटील गुस्से में गुर्राया,

'तो फिर देशमुख को क्या करना चाहिए, बोल?'

'मैं क्या बताऊं?' हरीबा महार बोला, 'देशमुख को चाहिए तो उसे...'

'अरे, क्या करना चाहिए?' पाटील बीच में चिल्लाया। 'क्या करना चाहिए, क्या अचार डाले? बताओ..।'

'अगर चाहिए तो मवेशी के शेड में ही दफन कर दे,' हरीबा ने कहा, 'जब बैल जिंदा था तब उसे चारा दिया, उसका इस्तेमाल किया, और अब उसे दफनाने में डर लग रहा है? दफना दो, बोलो।'

सभी लोग एक साथ बोलने लगे। चारों ओर हंगामा मच गया। जो लोग लड़ाई के लिए तैयार थे, वे भी बैठकर सुनने लगे। किसी को समझ नहीं आ रहा था। और जब अंत में हरीबा ने सुझाव दिया कि वे अपने मरे हुए जानवरों को खुद ही दफनाएँ, तो सब उलझन में पड़ गए। लेकिन हरीबा की बात ने देशमुख के दिल को छू

लिया। वह खड़ा हुआ, एक हाथ अपनी कमर पर रखकर झुका, और एक हाथ की मुट्ठी उल्टी करके मुँह के सामने रखकर रुआंसे स्वर में बोला,

'अरे, हरीबा महार! अब तेरे सामने रोऊं क्या?'

'रो, लेकिन एक तरफ से रो,' हरीबा बोला।

'मतलब, मैं दोनों तरफ से रो रहा हूँ? ये कैसे, बता?' देशमुख बोला, और पूरे गाँव ने पूछा,

'अरे हरीबा, साफ-साफ बोल। दोनों तरफ से रोने का क्या मतलब है?'

'मतलब ये,' हरीबा तीखे स्वर में बोला, 'जब हम मरे हुए जानवर उठाते हैं, तब भी तुम रोते हो, और जब हम नहीं उठाते, तब भी तुम रोते हो।'"

'अरे, पर कैसे कहूँ?' चावड़ी (सभा) चिल्लाई और हरीबा बोला,

'तुमने हमें अछूत क्यों बना रखा है?'

'तुम गंदे काम करते हो,' पाटील हुंकार भरते हुए बोला।

'इसलिए हमने अब वो काम छोड़ दिया है,' हरीबा ने जवाब दिया।

'तुम्हारे बाप-दादा ने मरे हुए जानवर उठाए थे, उसका क्या?'

'और तुम्हारे बाप-दादा ने पाडळी (गाँव) को लूटा था, उसका क्या?' हरीबा ने पलटकर पूछा, और पाटील हिचकिचाते हुए बोला,

'सीधा बोल।'

'मैं सीधा ही बोल रहा हूँ... अब अपने मरे हुए जानवर खुद उठाओ, हमें मत कहो,' यह कहते हुए हरीबा उठ खड़ा हुआ और चल पड़ा। सारे महार उसके पीछे-पीछे चलने लगे। गाँव अचानक चुप हो गया और उन्हें जाते हुए देखता रह गया।

अब महारों के खिलाफ कोई कड़ा कदम उठाए बिना बात नहीं बनेगी। किसी बड़े तरीके से उन्हें हराना होगा। उनका बहिष्कार होना चाहिए। महारों को खेतों में जाने मत दो, जानवरों को उनके आस-पास मत फटकने दो। उनके जानवरों को बंद कर दो, और गाँव के दुकानों पर उन्हें खड़ा मत होने दो। ऐसा फैसला लेकर, उन्हें घेरने का विचार करते हुए सभा समाप्त हो गई।

वो सारे लोग वैसे ही दादा देशमुख के हवेली की ओर चले गए। दो दिन से मृत पड़ा बैल उन्होंने देखा और फिर सबने मिलकर विचार किया। फिर बीस लोगों ने उस बैल को हवेली से बाहर निकाला। किसी तरह उसे बैलगाड़ी पर चढ़ाया और गाड़ी को जंगल की ओर ले गए। आगे दस लोगों ने एक गहरा गड्ढा खोदा था। उसमें आखिरकार उन्होंने बैल को धकेल दिया। सबने तब तक मिट्टी डाली जब तक कि गड्ढा पूरी तरह भर नहीं गया, और तब जाकर उन्होंने राहत की सांस ली। जो काम चार महारों से होना था, उसमें पूरा गाँव लग गया और तब जाकर उस बैल को दफन किया गया।

गाँव की सभा को छोड़कर हरीबा महार अपने समुदाय में आया और गंभीर स्वर में बोला,

'केश्या, बाळ्या, वो कावडनी (मरे हुए जानवरों को खींचने का औजार) लाओ।' उसी समय केसू महार वो कावडनी और रस्सी लेकर आया, और हरीबा फिर बोला,

'लकड़ी काटने की कुल्हाड़ी लाओ।'

बाळू ने कुल्हाड़ी लाकर पूछा, 'कुल्हाड़ी ले आया हूँ, अब क्या करना है?'

'कावडनी को तोड़ दो। उसे छोटे-छोटे टुकड़े कर दो,' हरीबा ने हुक्म दिया। बाळू ने कावडनी के टुकड़े किए और उसका ढेर लगाकर हरीबा ने उसमें आग लगा दी। जलती हुई आग में रस्सी डालकर हरीबा बोला, 'इस कावडनी को लेकर हमारे बाप-दादा ने जिंदगीभर मरे हुए जानवर उठाए। आज हमने इसे जला दिया है। अब आगे से मरे हुए जानवरों को हाथ नहीं लगाएंगे। चाहे भूखे मरें, लेकिन इज्जत के साथ मरेंगे। मरे हुए जानवर उठाने की वजह से हमें कुत्तों जैसा माना जा रहा है।'

सारे गाँव ने मिलकर देशमुख के बैल को दफन किया और महारों ने मरे हुए जानवरों को खींचने वाला औजार जला दिया।

उस दिन से गाँव की तस्वीर ही बदल गई। गाँव के बड़े लोग हर जगह महारों पर नज़र रखने लगे। वे इंतजार कर रहे थे कि कब कोई महार गलती करेगा। पूरे महारवाड़े पर उनकी पैनी निगाह थी।

महारों को भी इसका अहसास था। वे भी हर कदम सोच-समझकर उठा रहे थे। किसी को कोई मौका नहीं दे रहे थे। दूसरे खेतों में कदम नहीं रख रहे थे। सब कुछ सावधानी से कर रहे थे।

लेकिन उनके चारों ओर गाँव का जाल बिछ चुका था। जैसे कोई भेड़िया झाड़ियों में छिपकर शिकार के इंतजार में हो, वैसी हालत हो गई थी। जैसे ही महारों का पैर जमीं पर पड़ता, लाठियां चलने लगतीं। अगर कोई भेड़, बकरी, या जानवर उनकी जमीन में घुसता, उसे पकड़ लिया जाता। हालात ऐसे हो गए कि महार परेशान हो गए। गाँव और महारों के बीच की दुश्मनी चरम पर पहुंच गई।

महार अब घर से खेत तक केवल सरकारी सड़कों पर चलते दिखाई देने लगे। उनके जानवर भूख से मरने लगे। तब सभी महारों ने सभा की और हरीबा को बुलाया। वे सोचने लगे कि इस बहिष्कार को कैसे खत्म किया जाए। सभी महार दुःखी थे और हरीबा की बात सुनने लगे। केसू महार ने सबसे पहले कहा,

'हरीआबा, अब जीना कैसे है? गाँव ने हमारे खिलाफ सख्त रुख अपना लिया है। अब जीना मुश्किल हो गया है।'

हरीबा शांत स्वर में बोला, 'अगर हम कल फिर से कावडनी लेकर गाँव के मरे हुए जानवर उठाने लगें, तो कल ही हमारा बहिष्कार खत्म हो जाएगा। तो बताओ, तुम्हारा क्या विचार है?'

'नहीं, नहीं, ऐसा कैसे हो सकता है?' बाळू बोला, 'आपका विचार ही हमारा विचार है। आप ही बताइए!'

'तो सुनो,' हरीबा ने कहा, 'एक बड़ा बरगद का पेड़ था। हवा ने उसे जड़ से उखाड़ने की ठानी और तेज़ तूफान लेकर आई। तब पेड़ ने समझ लिया कि अब उसका जीना मुश्किल है। उसने फौरन अपनी सारी शाखाओं को

गिरा दिया और सिर्फ तना खड़ा रहा। तूफान जोर से आया, पर वह तना हिला तक नहीं। वैसे ही हमें भी करना है। हमें तने की तरह खड़ा रहना है।'

'क्या करना है, बताओ?' सभी ने पूछा। और हरीबा बोला,

'आठ दिनों के भीतर सारी बकरियाँ, भेड़ें, और जानवर बेच दो, खाली हो जाओ। जैसे वह पेड़, बस तना बचा रहे।'

'ठीक है। बुधवार को बाजार में बेच देंगे,' सभी ने सहमति जताई। और फिर हरीबा बोला,

'मैं कल तालुका जाकर सरकार से मदद की गुहार लगाऊंगा।'

सुबह-सुबह हरीबा तालुका की ओर निकल पड़ा। जब वह घर से निकला, तब अभी अंधेरा ही था। पहचान में आने लायक रौशनी नहीं थी। पूरब की तरफ थोड़ा उजाला हो रहा था। धरती और आकाश के बीच एक उजाले की पट्टी बन रही थी। बादलों की विशाल आकृतियाँ भयावह दिख रही थीं। वे धीरे-धीरे एक-दूसरे से टकरा रही थीं। सड़क किनारे के पेड़ों पर पक्षियों की चहचहाहट हो रही थी। हरीबा मन में हिल गया था।

उसे लगने लगा कि इस अंधेरे में घर छोड़ना ठीक नहीं था। आगे देखते हुए, वह कदम बढ़ाता हुआ मैदान में पहुँच गया। वह दोनों ओर से घीरे पलाश की झाड़ियों के बीच से चलने लगा।"

पलाश के पेड़ों ने उस बंजर जमीन को घेर लिया था। जगह-जगह पलाश के पेड़ खड़े थे। पारगांव की वह जमीन पलाश के पेड़ों के लिए मशहूर थी। यह सरकारी जमीन थी। पत्तलों और दोने बनाने के लिए गुरव लोग उस जमीन की नीलामी लेते थे। कई गुरव इस जमीन की नीलामी से साहूकार बन चुके थे। उस जमीन पर कई हत्याएँ होती थीं। चोर वहाँ घात लगाकर बैठते और यात्रियों को लूट लेते। कोई उनकी शिकायत नहीं करता था।

हर पांच साल बाद उस जमीन की नीलामी होती थी। 'खूनी माळ', 'पलाश की माळ' के नाम से लोग उसे जानते थे। गाँव के जानवर वहीं चरते थे।

हरीबा उस बंजर जमीन पर पहुँचा और अचानक डर गया। पास ही दो आदमी दिखे। वे कुछ बातें करते हुए हरीबा के आगे बढ़ रहे थे। उन्हें देखकर हरीबा के कदम ठिठक गए और उसी समय उन दोनों ने हरीबा को देखा और आवाज दी, 'कौन आ रहा है?'

'मैं हूँ, हरी! कौन हो तुम?'

'हम हैं। आओ, आओ। मैं हूँ नारू गुरव।' नारू गुरव की आवाज सुनकर हरीबा को हिम्मत मिली। वह तेजी से जाकर उनमें घुलमिलकर चलने लगा। नारू और शंकर ये दोनों तालुका की ओर जा रहे थे। आज ही पारगांव की पलाश की जमीन की सरकारी नीलामी होने वाली थी। उसके लिए ये दोनों गुरव पैसे लेकर जा रहे थे।

तीनों साथ होने से उन्हें भी अच्छा लगा। गाँव और महारों के झगड़े की चिंता भूलकर वे रास्ता चलने लगे। लेकिन इतनी सुबह हरीबा को जाते देख उन्हें थोड़ा शक हुआ, और जब पता चला कि वह भी तालुका की ओर जा रहा है, तो वे और भी सोच में पड़ गए।

तालुका पहुँचने के बाद गुरव नीलामी की ओर चला गया और हरीबा पारगांव पर मुकदमा करने के लिए एक अच्छे वकील की तलाश करने लगा। उसे एक ऐसा वकील चाहिए था जो उसकी बात सही ढंग से रखे, उसके परिवार का बहिष्कार खत्म करवाए। वह इधर-उधर पूछताछ करता हुआ मामलतदार ऑफिस के सामने पहुँचा।

उसी समय पारगांव की उस पलाश की जमीन की नीलामी शुरू हो चुकी थी। गाँव-गाँव के गुरव ही आए थे। वे अपनी जेब से पैसे निकालने की तैयारी कर रहे थे, अंदाजा लगा रहे थे कि कौन कितना बोली लगाएगा। और सरकारी क्लर्क बार-बार घोषित की गई राशि दोहराते हुए ऊब चुका था।

एक गुरव 105 रुपए तक बोली लगा चुका था। बाकी लोग एक-दूसरे को तिरछी नजरों से देखते हुए हिम्मत जुटा रहे थे।

हरीबा भीड़ में खड़ा होकर सुन रहा था। उसके दिमाग में विचार आया कि अगर उसने खुद नीलामी ले ली तो क्या होगा, और सरकारी क्लर्क थककर बोला, '105 रुपये एक बार-'

'210 रुपये!' अचानक आवाज आई।

सभी गुरव तेजी से घूमे। कई आँखें हरीबा पर टिक गईं। हरीबा ने दोगुनी बोली लगाई तो सबको आश्चर्य हुआ। पारगांव के गुरव उसे देखते ही रह गए। पास के गाँव का एक अमीर गुरव आगे बढ़ा और जोर से आवाज लगाई, '300 रुपये।'

और हरीबा चिल्लाया- '500 रुपये!' हरीबा की आवाज ने सभी की इच्छा और उत्साह को ठंडा कर दिया।

हरीबा के नाम की नीलामी घोषित की गई और हरी महार ने तुरंत अपनी जेब से 500 रुपये भर दिए।

वह दिन महारों के लिए भाग्यशाली साबित हुआ। उन्होंने अपने जानवर बेचने का इरादा छोड़ दिया। सारे बच्चे, अपनी बकरियाँ, भेड़ें अब पलाश की जमीन पर चरने लगीं। महारों को पाँव रखने की जगह मिल गई। पलाश को पत्ते तीन कहकर उपहास किया जाता था, लेकिन उसी पलाश ने महारों का जीवन सुखी और सुरक्षित कर दिया। इतना ही नहीं, हालात की चक्की अब महारों के पक्ष में तेजी से घूमने लगी। महारों की तरक्की शुरू हो गई।

पलाश की जमीन पारगांव की नींव का एक मजबूत हिस्सा थी। अब तक गाँव के जानवर वहाँ चरने जाते थे। नीलामी लेने वाले गुरव केवल पलाश के पत्तों तक ही ध्यान देते थे। जमीन पर उगा हरा घास उन्हें नहीं चाहिए था। वे गाँव के जानवरों को चरने से नहीं रोकते थे, उन्हें खुशी से चरने देते थे। गाँव के जानवर मस्त होकर चरते।

लेकिन हरीबा ने नीलामी लेकर पूरा खेल पलट दिया। उस जमीन पर चरने की आदत से बँधे गाँव के जानवर कहीं और ठहरते नहीं थे। जब भी उन्हें चरने के लिए छोड़ा जाता, वे पलाश की जमीन की ओर भागते, और हरीबा उन्हें एक-एक करके खदेड़कर बाड़े में बंद कर देता। महारों से पेनल्टी वसूल करने वाला दत्ता पाटील अब गाँव से पेनल्टी वसूल करने लगा। दो साल में गाँव परेशान और हताश हो गया।

एक बार दिन चढ़ गया था। पलाश की जमीन पर महारों के जानवर चर रहे थे। हरी महार हाथ में लाठी लिए एक पलाश की झाड़ी के पास बैठा था। तभी दत्ता पाटील के बारह जानवर चरते-चरते पलाश की जमीन पर आ गए। पाटील का आदमी जानवरों से काफी दूर था। उन जानवरों को देखकर हरीबा खुश हो गया।

वह उन जानवरों और उस दिन का कई दिनों से इंतजार कर रहा था। वह उन जानवरों को हाँकता हुआ चावड़ी (गाँव की सभा) की ओर गया और पाटील से बोला, 'पाटील, बाड़े की चाबी दो।'

'क्यों, किसलिए चाहिए?' पाटील घबराकर बोला।

'तुम्हारे जानवर बाड़े में बंद करने हैं...' हरीबा बोला और पाटील चौंक गया। उसने चावड़ी की ओर आकर जानवरों को गिना, और उसका चेहरा उतर गया। बाज़ार के लोग इकट्ठा हुए। बाड़ा भरने के लिए गाँव के लोग जमा हो गए। गरीबों ने चावड़ी के सामने भीड़ लगाई। उस भीड़ में हरी महार अकेला खड़ा था।

तभी पाटील बोला, 'तू क्या कर रहा है, हरीबा?'

'तुमने जो किया, वही कर रहा हूँ मैं।' हरीबा बोला।

'गाँव तबाह हो गया है। इस विवाद में सरकारी खजाना भर गया, ये तुझे समझ में आता है?' पाटील ने शांत होकर पूछा; और हरीबा बोला,

'बर्तन बेचकर महारों ने पेनल्टी भरी है, पाटील।'

'हाँ, हाँ। यह सच है।' पाटील बोला, 'पर गाँव के बिना महारवाड़ा सुना है और महारवाड़े के बिना गाँव में कोई रौनक नहीं। यह सबकी ज़मीन है, सभी को एक ही माँ के बच्चों की तरह रहना चाहिए।'

'ऐसा कैसे?' हरीबा दुख भरी आवाज़ में बोला, 'अगर ऐसा होता, तो गाँव ने हमारे चारों ओर यह जाल ही नहीं बिछाया होता।'

'अब हम यह जाल हटा देंगे।' पाटील बोला, 'आगे से हम सभी सीधे-सादे बनकर रहेंगे।'

'सीधे कैसे?' बीच में हरीबा ने पूछा और पाटील बोला,

'अरे भाई, इंसानों की तरह!' यह सुनकर हरीबा ने गहरी साँस ली। वह साँस जो हरीबा ने कितने ही दिनों से रोके रखी थी।

------xxxxx------